VOL- VII ISSUE- II FEBRUARY 2020 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 6.293 ISSN 2349-638x

# भारतीय राजनीति और प्रशासन में व्याप्त व्यंग्य

डॉ. केशव क्षिरसागर
हिंदी विभाग,
रामकृष्ण परमहंस माहविद्यालय,
उस्मानाबाद

भूमिका -

साहित्य का एक माध्यम भारतीय राजनीती भी रही है, राजनीती में व्याप्त वैचारिक गंदगी, स्वार्थी भाईचारा, अपना उल्लू सीधा करने की कोशिश, देश विकास को लेकर दुहेरे मापदंड आदि बातों के कारण सहित्यकारों ने उसे अपना निशाना बनाया है । राजनीतीक नेताओं के प्रति जनता के आक्रोश और निराशा की भावना सच्चे अर्थों में प्रकट होती है, इस संदर्भ में श्रेष्ठ व्यंग्यकार सदर्शन मजीठिया अपनी रचना 'मेरी श्रेष्ठ रचनाएँ' नामक किताब में एक जगह लिखते है - "राजनीतिक नेताओं ने सारे देश की लुटिया डुबो रखी है, यदि भारत के समस्त नेताओं को कहीं एक्सपोर्ट कर दिया जाए तो भारत की समस्त समस्या एक ही दिन और रात में सुलझ जायेगी और भावात्मक एकता का विकास होगा सो अलग ।"१ देश की राजनीती ने जनता के सपनों को चकनाचूर कर दिया है, केवल आश्वाशन देकर चुनकर आने के बाद दूर से टाटा करनेवाले नेताओं को देखकर रंग बदलनेवाले गिरगिट की याद हो आती है । हिंदी साहित्य के महान आँचलिक लेखक फनीश्वरनाथ रेणु जी अपनी 'जलवा' नामक कहानी की पात्र फ़ातिमा - आपने पॉलिटिक्स क्यों छोड़ दी ? पूछे जाने पर फनकार कर कहती है - "यह मुझसे क्यों पूछते हो ? अपने उन नवाबजादों से कभी क्यों नहीं पूछा, जो रातों - रात 'देश - भगत' बनकर काँग्रेस के खेमे में दाखिल हो गये, बगल में छुरी दबाकर । अपने नेताओं से क्यों नहीं जवाब - तलब करते ? फिरका - परस्त लोगों को इज्जत आफजाई की गई और मुल्क के लिए मरने मिटने वालों को दूध की मक्खी की तरह निकल फेंका ।" २

नागार्जुन जैसे कवि ही नहीं श्री जैनेंद्र जैसे चिंतक - कथाकार भी राजनीती के घिनौने खेल को अपनी लेखनी के माध्यम से अनावृत्त करने में जुट गए थे । क्या कहानीकार, निबंधकार, कवि, उपन्यासकार और क्या सामान्य पाठक सभी राजनीती के दंश से अछूते न रह सके । व्यंग्य रचना के लिए यह अनुकूल क्षण था जब ढेर सारी विसंगतियाँ एक तशतरी में सजाकर प्रस्तुत की गई हों । राजनेताओं के क्रिया - व्यापार हिंदी - व्यंग्य यात्रा का मजबूत आधार बनते जा रहे थे, नेताओं का नाम ही व्यंग्य का प्रतिक बन गया था । राजनीतिक ठगों की निर्लज्ज लुट ने आम जनता के मानस में क्या बिंब उभरे इसकी जीवंत प्रस्तुति तत्कालीन व्यंग्यकारों के साहित्य में बड़े पैमाने पर देखी जा सकती है । इसी कारण हिंदी के व्यंग्य साहित्यकारों की लेखनी अत्यंत तीखे रूप से नेताओं की असलियत जनता के सामने लेन के लिए रात - दिन निरंतर कर्मरत दिखाई देती है । जिसका माध्यम भारतीय - प्रजातंत्र की विकृतियाँ और खोखलापन खुलकर लोगों से सामने आया क्योंकि आजादी के बाद अपना शासन खुद चुनने के ढोंग भरे खेल का मोहरा बनते

समय आम भारतीय नागरिक कितना उल्लसित, उत्साहित था मगर अपने नेताओं के असली रंग देखकर उसे पल - पल पश्चाताप ही होता रहा । नेताओं का भ्रष्ट आचरण और चरित्र देखकर श्री शरद जोशी जी ने इन्हें 'बगुले' की उपमा दी है । अपनी यथा संभव नामक रचना में एक जगह वे लिखते हैं - "यदि बगुले को गौर से देखो, स्थानीय नेता - सा लगता है । शिकार पर नजर रखे, विनय की प्रतिमूर्ति ऊपर से धीर - गंभीर अंदर से महा चालू और चालाक । जहाँ तक राजनीति का सवाल है परम - पद तो प्राय: बगुले को ही प्राप्त होते हैं । जो ऊपर से जितने सफेद और अंदर से जितने घाघ और स्वार्थी होते हैं, राजनीती में उन्हें सर्वाधिक सफलता प्राप्त होती है ।"३ चरित्र के सारे मानदंड यूँ भी नेता के सम्मुख नतशिर हो जाते है, नेताओं के मामले में चरित्र कही पर भी आड़े नहीं आता नेतृत्व आपने आप में चरित्र ही है । नेता जी का नाम आते ही खादी भी अनायास ही जुड़ जाती है । इन नेताओं के कारण ही खादी इतनी बदनाम हुई कि उसकी मूल भावना 'स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग' ही गायब हो गई आम जनता के मन में उसके प्रति श्रध्दा घटी तो नेता भी अब उससे परहेज करने लगे हैं । इसी प्रकार गाँधी जी का नाम भी नेताजी के साथ जुड़ गया है । उनके नाम कासहारा लेकर ही तो उनकी नैया पार हो जाती है । गाँधीवाद को बुद्धिजीवियों, अध्यापकों और मध्यमवर्गीय व्यक्ति की बहस का मुद्दा बनाकर नेताओं ने अपनी गद्दी सुरक्षित कर ली है । कुर्सी के प्रति अपार मोह ही व्यक्ति को नेता बनने की प्रेरणा देता है । अपनी कुर्सी की रक्षा के लिए नेता अलग - अलग हथकंडे अपनाने से परहेज नहीं आते । और इन्हीं गुणों को आधार बनाकर व्यंग्यकार कवियों और साहित्यकारों ने राजनीती और प्रशासन पर करारे व्यंग्य बाण छोड़े है । नेताओं की आत्मसंतुष्टि और दल - बदलू पण को भी साहित्यकारों ने आहात कर दिया है । दल - बदलने की इस प्रवृत्ति के लिए नेताओं ने अलग - अलग नाम दे रखे है जैसे दुसरे दडल या व्यक्ति ने प्रलोभन दिया, मुख्यमंत्री की कुर्सी हिलती नजर आई तो सामर्थ्य के लिए साथ हो लिए आदि । यह जमाना ही सामर्थ्य के घर बैठ जाने का है, आज हर कोई नेता किसी सामर्थ्यवान के घर पर बैठा हुआ दिखाई देते है जो मंत्रिमंडल बनाने में सक्षम है । शादी इस पार्टी से हुई थी मगर मंत्रीमंडल दूसरी पार्टी वाला बनाने लगा तो उसी की बहु बन गए । आज नेताओं के आचरण के सारे पैमाने बदल गए है । हरिशंकर परसाई जी इससे भी अधिक आक्रोश के साथ राजनीतिज्ञों की तुलना वेश्याओं से करते हुए एक जगह लिखते है - "राजनीति के मर्दों ने वेश्याओं को मात कर दिया, किसी - किसी ने तो घंटे भर में तीन - तीन खसम बदल डाले ।" ४ स्वाधीनता के बाद आम जनता ने जनतंत्र का हार्दिक स्वागत किया था किन्तु यह ख़ुशी ज्यादा दिन तक नहीं टिक सकी यह केवल सत्ता का रूपांतरण ही था । चुनाव निकट आते ही जनसेवा के आकांक्षी नेता अपने - अपने हाई कमांड के पास हाजिर हो जाते है । अपने द्वारा की गई जनसेवा, पार्टी सेवा, आंदोलन, जेल - यात्राओं के रिकार्ड के साथ संभावित प्रत्यांशियों के काले कारनामों के चिट्ठे भी हाई कमांड को समय - समय पर भेजी जाती है जो पूरी तरह से झूठी होती है । चुनाव का दौर किसी उत्सव का सा बोध कराता है, गाँव से लेकर शहर तक की सारी सडके और गलियाँ रंगों में डूब - सी जाती है जैसे दीपावली में हर जगह दीपक जल उठते है ठीक इसी तरह नेताओं के पोश्तर लग जाते है । इस संदर्भ में प्रदीप पंत नामक व्यंग्यकार एक जगह लिखते हैं - "समा बंधा था, हर मुहल्ले में झंडियाँ टंगी रहती, शोर - गुल मचा रहता,

लगता कि जैसे कदम - कदम पर शादियाँ हो रही हैं, हर नुक्कड़ पर बारात आ रही है। घर पर नेता आते, नेताओं के चमचे आते बड़े आदब से बोलते दुख - सुख पूछते, दुख होने पर दुखी होते।" ५ नेताओं के झूठे नारों और वायदों से सारा आकाश भर जाता है, प्रचार का शोर वातावरण को हलचल और चहल - पहल से भर देता है । शरद जोशी की रचना 'जम्बुद्वीप में चुनाव' तथा हरिशंकर परसाई जी की श्रेष्ठ रचना 'हम बिहार में चुनाव लड़ रहे हैं' में चुनाव की राजनीति का अत्यंत सजीव चित्रण प्रस्तुत किया गया है । जो राजनीति और प्रशासन का असली चेहरा समाज के सामने लाने में बहुत बड़ी भूमिका निभाता है। नेता चुनाव जीतने के लिए साम - दाम - दंड - भेद आदि लगभग सभी साधनों का बखूबी इस्तेमाल करते है जिसे श्री लतीफ़ घोंघी, श्रीलाल शुक्ल, बरसानेलाल चतुर्वेदी, श्रीबाल पाण्डेय, अमृत नाहटा, कणाद ऋषि भटनागर आदि व्यंग्यकारों ने अपना निशाना बनाकर उसे पूरी तरह से बे पर्दा करने की कोशिश की है । आजादी के बाद गंदी राजनीति ने व्यक्ति का महत्व एक वोट से ज्यादा नहीं रहने दिया, इसीलिए हर पार्टी का टिकिट भी उसी नेता को दिया जाता है जो ज्यादा से ज्यादा वोट खींच सके । धन की शक्ति, गुंडों की ताकत और पोलोंग बूथ पर कब्ज़ा आदि बातों के अतिरिक्त जाति, वर्ण और धर्म के आधार पर चुनाव के समीकरण तय किए जाते है । अपनी - अपनी जातियों के आधार पर नेता लोग वोट बैंक तय करते है । 'मैला आँचल' उपन्यास के प्रमुख पात्र नायक प्रशांत के संदर्भ में रेणुजी लिखते हैं - "जात - पात नहीं मानने वालों की भी जाति होती है ।"६ यह कितनी बड़ी विडंबना है कि जिस देश का संविधान और चुनाव कानून जाति - पांति, धर्म, भाषा, संप्रदाय या क्षेत्र के नाम पर वोट माँगने को असंवैधानिक मानता हो, वहाँ इन्ही आधारों पर वोट बटोरे जाते हैं । राजनीतिक दल अपने प्रत्यांशी का चयन भी इन्हीं आधारों पर करते हैं और और जातीय या धर्म के आधार पर विजय प्राप्त करने के समीकरण बनाकर उसे हर प्रकार से प्रत्यक्ष में उतारने का प्रयास किया जाता है ।

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी व्यंग्यकारों ने इस स्थिति को भली - भांति समझकर इस प्रकार की प्रवृतियों पर खुलकर व्यंग्य कर उसका कडा विरोध किया है । आझादी के बाद अनेक प्रांतीय राजनीतिक दल निर्माण हुए पर कोई भी दल लोंगों के सामाजिक स्तर में परिवर्तन करने में उन्हें मुलभुत सुविधाएँ मुहय्या कराने में असमर्थ ही रह गया। राजनीतिक दलों का केवल संख्यात्मक विकास हुआ गुणात्मक नहीं और वे किसी न किसी छोटे सी विचारधारा से ही चिपके रह गए संपूर्ण भारतीयता की बात किसी ने भी नहीं की बस हर बार अपनी कुर्सी और सत्ता प्राप्त करना ही उनका एकमात्र लक्ष्य बन गया था जिससे उनका पूरी तरह से विस्तार और विकास भी नहीं हुआ। प्रजातंत्र के प्राय: सभी दलों द्वारा किए जानेवाले कार्यकलापों और उनकी हकीकतों को व्यंग्यकारों ने समझा, देखा और कहा कच्चा चिट्ठा जनता की अदालत में प्रस्तुत किया। कांग्रेस पार्टी ने कूटनीति की चालों द्वारा विरोधी विचारधाराओं और नीतियों को समर्थन देकर विपक्षी पार्टियों को प्रभावशाली बनने ही नहीं दिया । विडंबना यह रही कि ऐसी स्थिति में देश भी उन्नति और विकास के पथ आगे नहीं बढ़ पाया। श्री हरिशंकर परसाई जी ने कांग्रेस पार्टी के कार्य - कलापों पर सर्वाधिक पैनी नजर रखी है। उनकी 'सज्जन दुर्जन और कांग्रेसजन' और 'दुर्गापुर में जेबकतरे' आदि रचनाएँ विशेष उल्लेखनीय हैं । अपनी रचना में एक जगह परसाई जी लिखते है - "स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व देश की

कांग्रेस पार्टी की जेब में सिवाय कष्ट, संघर्ष और त्याग के कुछ नहीं था । उस समय जेबकतरे कांग्रेस की ओर से उदासीन रहें । जैसे ही देश स्वतंत्र हुआ और कांग्रेस सत्तारूढ़ हुई की भ्रष्ट, निकम्मे और दुश्चरित कांग्रेस का बिल्ला लगाकर 'भगत - बिल्ली' की भांति कांग्रेस में घुस गये । इन तस्करों ने कांग्रेस की प्रतिमा चुराई, फिर ईमान चुराया, इन जेबकतरों की संख्या दिन - प्रतिदिन बढ़ती गई और आस्था का भी अंत हो गया ।"७ इसके साथ ही कांग्रेस पार्टी की भीतरी खींचतान, गुटबाजी, टिकट को लेकर के झगड़े, दल की विनम्र सेवा, चापलूसी सत्ता - लोलुपता आदि विभिन्न प्रकार की स्वार्थी भावना का अत्यंत खुलकर विरोध कर सामान्य जनता को सजग करने में तत्कालीन समय में हरिशंकर परसाई जी की महत्वपूर्ण और प्रमाणिक भूमिका रही है ।

कम्युनिष्ट पार्टी, द्रुमुक, अन्नाद्रुमुक, मुस्लिम लीग, रामराज्य परिषद, तेलगु - देशम, असमगण - परिषद, असमगण - छात्र - परिषद, सिक्किम संग्राम परिषद, मिजो नेशनल फ्रंट, कश्मीर लिबरेशन फ्रंट, नेशनल कान्फ्रेंन्स, शिवशेना, राष्ट्रवादी आदि अनेक क्षेत्रीय, स्थानीय एवं वर्ग विशेष पर आधारित संगठन राजनीति के आकाश में उभरकर सामने आये जिसमें से कुछ लुप्तप्राय हो गए तो कुछ अभी भी अपने अस्तित्व को जीवित रखने की भरकस कोशिश कर रहें हैं । परसाई जी ने अपनी विचारधारागत प्रतिबद्धता के कारण साम्यवादियों पर कम ही व्यंग्य प्रहार किए हैं । स्वातंत्र्योत्तर हिंदी गद्य व्यंग्यकारों ने जिन प्रमुख राजनेताओं और उनके क्रिया - कलापों को अपने व्यंग्य का निशाना बनाया है उनमें से प्रमुख नाम इस प्रकार हैं - महात्मा गाँधी - महात्मा उपाधि, जवाहरलाल नेहरू - अंतर्राष्ट्रीय गुड़िया सम्मेलन उद्घाटन, श्रीमती इंदिरा गाँधी - कार्यप्रणाली, श्री मोरारजी देसाई और उनका शिवाम्बुपान, श्री जगजीवनराम की सत्ता लोलुप चेष्टाएँ, श्री चौधरी चरण सिंह के दल - परिवर्तन के समीकरण, श्री यशवंतराव चव्हाण - की कार्यप्रणाली, श्री आचार्य जे. बी. कृपलानी, श्री अटल बिहारी वाचपेई, श्री लालकृष्ण अडवाणी, श्री संजय गाँधी, श्री राजीव गाँधी, श्रीमती सोनिया गाँधी, श्री चंद्रशेखर, इसके साथ जनता दल, कांग्रेस दल के अन्य नेतागण और राज्यों के मुख्यमंत्री और अन्य मंत्रियों तथा भारतीय राजनीति को प्रभावित करनेवाले अन्य व्यक्तियों में आचार्य विनोबा भावे एवं उनका सर्वोदय/ भूदान आंदोलन, लोकनायक जयप्रकाश नारायण और उनकी संपूर्ण क्रांति आदि को भी अपनी लेखनी का माध्यम बनाने की कोशिश तत्कालीन व्यंग्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से करने अत्यंत सफलतापूर्वक और नैतिक जिम्मेदारी मानकर की है । भारतीय राजनीती के साथ - साथ प्रशासन - तंत्र एवं उसके भ्रष्टाचार को अपने साहित्य का प्रमुख विषय बनाने की कोशिश व्यंग्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से की है । देश की आजादी के बाद जिस अमूल परिवर्तन की कल्पना जन - मानस ने की थी उसे साकार रूप नहीं मिल सका । जनता स्वर्णिम क्षणों की बाट जोहती रही किन्तु चिर - प्रतीक्षा के सिवा उसे कुछ भी नहीं मिला । प्रजातंत्र रूपी परिअर्तन अत्यंत सुखद था किन्तु नौकरशाही पूरी तरह से केंद्र में रही और उसने केवल अपना उल्लू सीधा किया, जन - सामान्य को कुछ भी नहीं मिला जिसका वह सच्चा और पूरा हक़दार था । वह पहले भी विकास से कोसो दूर था आजा भी उसकी माली हालत बदली हुई नहीं है । तत्कालीन व्यंग्यकारों ने प्रशासन की घूसखोरी, भाई - भतीजावाद, निठ्ठलेपन, लालफीताशाही, कार्यप्रणाली, सार्वजानिक सेवाएँ, पुलिस व्यवस्था, अस्पताल एवं चिकित्सा क्षेत्र, भारतीय रेल एवं यातायात -

व्यवस्था, डाक - व्यवस्था, न्याय व्यवस्था आदि सभी कमजोरियों को उजागर कर समाज के सामने प्रस्तुत कर नौकरशाही का नकाब उतारकर उसका असली चेहरा सामने लाने की पूरी कोशिश की है जिसमें उन्हें बहुत हद तक सफलता भी मिली है । उन्होंने अपना कर्तव्य पूरा किया है, अब हमारी जिम्मेदारी है की इस परंपरा को निरंतर आगे बढ़ाएँ रखे ताकि अज्ञान के कारण जो स्थिति हमारे पूर्वजों की हुई थी वह हमारी न हो जाएँ।

संदर्भ : -

१) श्री सुदर्शन मजीठिया - 'मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ' - पृ. क्र. ४१
२) श्री फनीश्वरनाथ रेणु - 'मेरी प्रिय कहानियाँ'- पृ. क्र. ९१
३) श्री शरद जोशी - 'यथा संभव'- पृ. क्र. १७
४) श्री कमला प्रसाद - 'परसाई रचनावली : भाग एक' - पृ. क्र. ११८
५) श्री प्रदीप पंत - 'प्राइवेट सेक्टर का व्यंग्यकार'- पृ. क्र. ८१
६) श्री फनीश्वरनाथ रेणु - 'मैला आँचल'- पृ. क्र. ५२
७) श्री कमला प्रसाद - 'परसाई रचनावली : भाग पाँच' - पृ. क्र. ८७

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com